ओम् शान्ति

17 जुलाई 2016 **ओआरसी(दिल्ली)**

"जो कुछ भी सुना अगर उसी प्रमाण चलो और अपना कार्य करो तो सब ठीक हो जाएगा"

(चार्टर्ड ऍकाउन्टेंट्स के प्रति आदरणीया गुल्ज़ार दादी जी की शुभ प्रेरणाएं)

आप सब जो भी आए हैं, आपको सुनने से कुछ तो मिला, जो कुछ भी सुना अगर उसी प्रमाण चलो और अपना कार्य करते रहो तो सब ठीक हो सकता है। यहाँ स्थूल में कुछ भी नहीं छोड़ना है, जो भी छोड़ना है, वो मन से छोड़ना है। छोड़ना भी क्या है? मन के अन्दर के जो विकार हैं, वो छोड़ने हैं, इन विकारों ने मनुष्य को ऐसे पकड़ा है, जो पता भी नहीं पड़ता कि ये विकार क्या हैं। जो भी आपने सुना, अगर आपको वो जानने और करने की इच्छा है, इसमें जबरदस्ती नहीं है, अपनी खुशी से करना है। ये आपका ही घर है, घर में चक्कर लगाने की मना नहीं है, कभी-भी आ सकते हो। आपके आने से हमें बहुत खुशी हुई, यहाँ आने से पता तो पड़ता है कि सच क्या है। वैसे तो कई बार आए भी होंगे, लेकिन क्या करना है और क्या बनना है, ये सुनने को तो मिलता है। बहुत अच्छा लगता है, जो आप यहाँ आने का समय निकालते हैं। यहाँ आने से आपको डबल फायदा है, एक तो बैठने से एकाग्रता होती है, दूसरा संगठन का लाभ मिलता है, लेकिन जब भी आओ तो समझो मुझे कुछ लेके जाना है। मैं जब किसी भी भाई या बहन को देखती हूँ, तो मन में एक ही संकल्प आता है कि इस भाई या इस बहन का योग बाबा से लग जाए, योग से क्या मिलता है, इन्हें ये अनुभव हो जाए। अगर आपको विशेष कुछ जानना हो, तो अलग से भी समय ले सकते हो, इच्छा है तो पूरी करो, अभी समय का कोई भरोषा नहीं है।